राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

सहायक प्रबंधक –ग्रेड 'ए' पद के लिए लिखित परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम

वृक्षरोपण /बागान विकास

यह पाठ्यक्रम निदर्शी है, सम्पूर्ण नहीं

पाठ्यक्रम निदर्शी है और संपूर्ण नहीं है। परीक्षा की तैयारी के दौरान पाठ्यक्रम को केवल सूचना का स्रोत नहीं माना जाना चाहिए। परीक्षा के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए, संबंधित विषय के दायरे में आने वाले सभी मामलों का उम्मीदवार को अध्ययन करना होगा क्योंकि विषय के अधीन सभी प्रासंगिक मामलों पर प्रश्न पूछे जा सकते हैं। परीक्षा के लिए उपस्थित होने वाले उम्मीदवारों को उन सवालों के जवाब देने के लिए भी खुद को तैयार करना चाहिए जो वर्तमान / नवीनतम घटनाक्रम / अधिनियमों पर पूछे जा सकते हैं, हालांकि उन विषयों को विशेष रूप से पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है।

I. फल और बागान फसलें

भारत में फल और बागान फसल उद्योग, उसकी वर्तमान स्थिति और संभाव्यताएँ .विभिन्न फसलों का कृषि-जलवायु विस्तार .प्रोपेगेशन की पद्धतियाँ; मिस्ट प्रोपेगेशन तथा क्लोनल और माइक्रो प्रोपेगेशन)ऊतक संवर्धन (में हुई प्रगति, जड़रोपण तथा इसके सह-कारकों का क्रियात्मक आधार .विभिन्न फसलों के मूलस्कन्ध)रूटस्टॉक (तथा मूलस्कंध अंकुरों में असंगति .पौध विकास के नियंत्रक, बाधक, अवरोधक तत्व तथा फलों के लगने, उनकी वृद्धि और उनके पकने में उनकी भूमिका .फलोद्यान प्रबंधन पद्धतियाँ; जल प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई, पौधों को काटना-छाँटना और अपेक्षित आकार देना, फल विरलन)थिनिंग (और फल पतन)ड्रॉप(; बीज और अंकुरों की प्रसुप्तावस्था, प्रशीतन आवश्यकताएँ, अंतर-फसलें और फसल व्यवस्था .

सेब, अखरोट, आम, अंगूर, अमरूद, अनानास, केला, बेर, अनार, पपीता और नीबू वंशीय फल जैसे महत्त्वपूर्ण फलों की खेती, नारियल, सुपारी, काजू, मिर्च और इलायची जैसी बागान फसलों की खेती, नई विकसित संकर किस्में, इन फसलों के उत्पादन की प्रमुख समस्याएँ, इनके लिए अनुसंधान से विकसित उन्नत उत्पादन तकनीकें .

फसल उत्पादन की पुरानी समस्याओं की वर्तमान स्थिति की समीक्षा और अनुसंधान के जरिये उन समस्याओं के निराकरण में प्राप्त सफलता आम का आकार विकृत होना. हैं इनमें से कुछ–; फल का दलदला)स्पंजी (होना; फल का वैकल्पिक वहन)आल्टरनेट बियरिंग(; नीबू वंशीय फलों में फल ह्रास; अमरूद में फल का मुरझाना, नारियल में जड़ का मुरझाना, मिर्च की फसल का मुरझाना, इलायची की फसल में कट्टे की बीमारी आदि .

II .फल और सब्जियों के लिए प्रयुक्त प्रौद्योगिकी :

फल सब्जी परिरक्षण के लिए कटाई के बाद आवश्यक प्रौद्योगिकी की महत्ता; ताज़े और प्रसंस्कृत उत्पादों के सड़ने के कारण .परिरक्षण के सिद्धान्त और पद्धतियाँ, जैसे –डिब्बाबंदी)कैनिंग(, निर्जलन)डीहाइड्रेशन), हिमकरण)फ्रीजिंग(, किण्वन)फ़र्मेंटेशन(, फ्रीज़ ड्राइंग .भंडारण की क्रियात्मकता –समस्याएँ और महत्ता, भंडारण के सिद्धान्त और पद्धतियाँ .

III. सब्जियाँ

भारत में सब्जी उद्योग, सब्जियों की पोषकता, जलवायु संबंधी आवश्यकताएँ, पौधशाला प्रबंधन, उत्पादन की प्रमुख समस्याएँ, खरपतवार नियंत्रण, पलवार, सब्जियों का परिवहन और विपणन .बीज उत्पादन, बीज शुद्धता और जीवनक्षमता .गोभी वंशीय)कोल (सब्जियों, आलू वंशीय)ट्यूबर (सब्जियों, कंद)रूट (सब्जियों, पत्तेदार सब्जियों, कद्दू कोंहड़ा वंशीय सब्जियों, फलियों, मटर, प्याज जैसी महत्त्वपूर्ण सब्जियों की फसलों में सुधार के लिए उनकी खेती और प्रोपेगेशन .एफ़ 1संकर क़िस्मों का उत्पादन, नर अनुर्वरता)स्टेरिलिटी(, संकर क़िस्मों की बेहतर गुणवत्ता, प्रजनन)ब्रीडिंग .(

IV. फूल उत्पादन और लैंडस्केप गार्डेनिंग

भारत में बगीचा निर्माण का इतिहास, लैंडस्केप गार्डेनिंग के सिद्धान्त .बगीचा निर्माण की शैलियाँ और प्रकार .सजावटी पौधों, फूलदार पौधों और छायादार पौधों के साथ-साथ एकवर्षीय पौधों, पत्तेदार बहुवर्षीय)सदाबहार (पौधों और विभिन्न

मौसमी पौधों का प्रोपेगेशन और देखभाल .सजावटी पत्तेदार पौधे और इनडोर गार्डेनिंग .गुलाब, गुलदाउदी, चमेली, रजनीगंधा, ऑर्किड और ग्लैडियोलस की खेती और विपणन .बोनसाई बनाने की तकनीक .